विजयेन्द्र झा व्यक्तित्व कृतित्व: एक विश्लेषण

(Bijayendra Jha s Personality Compositions: An Analysis)

डा. सुमन कुमार [1], डा. सुरेन्द्र भारद्वाज[2], डा. राधा कुमारी[3], नीशु कुमारी[4]

[1] *अध्यक्ष, मैथिली विभाग, एम. एल. टी. कालेज, सहरसा, बिहार, भारत*

[2] *वरीय सहायक प्राचार्य, मैथिली विभाग, सी. एम. कालेज, दरभंगा, बिहार, भारत*

[3] *अध्यक्ष, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, पूर्णिया विश्वविद्यालय,पूर्णिया, बिहार, भारत*

[4] *शोधार्थी, (यूजीसी नेट), मैथिली, एल. एन. एम. यू., दरभंगा, बिहार, भारत*

सारांश: **डा. विजयेन्द्र झा मैथिली भाषा साहित्यक ख्यातिनामा विद्वान् छथि। मैथिली जगतमे, अल्प समयहिमे, ई एकटा वैयाकरण, भाषाविज्ञानी, इतिहासकार, अन्वेषक, संपादक, अनुवादक, प्रखर वक्ता तथा लब्धप्रतिष्ठ शिक्षकक रूपमे ख्यात छथि।**

बचपनहिसँ आर्थिक विपन्नताक कारणेँ हिनक जीवन अत्यन्त संघर्षशील रहल। मैट्रिक पास कएलाक पश्चात् आगाँक एम. ए. धरिक पढाइ लेल झंझारपुर, दरभंगा आ पटनामे रहबाक लेल, अपन उदर पोषणसँ ल डेरा भाडा, किताब काँपी सभ खर्च स्वयं ई ट्यूशन क कए पूर्ति करैत छलाह। एहना स्थितिमे अनुमान लगाओल जा सकैछ जे जीवनमे हिनका कोन प्रकारक संघर्षक सामना करए पडल हेतनि। आर्थिक संकटकेँ दूर करबाक हेतु पटना विश्वविद्यलय, पटनासँ मैथिली विषयमे प्रथम वर्गमे प्रथम स्थान कएलाक पश्चात् ई देशक अनेक राज्यमे रोजी रोटीक लेल भटकैत रहलाह। डा. झा 2020 **मे विद्यावारिधिक उपाधि बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालयसँ तखन प्राप्त कएलनि जखन ओ बिहार लोक सेवा आयोगसँ** 2016 **मे चयनित भ बिहार विश्वविद्यालयक ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालयमे सहायक प्राचार्यक रूपमे योगदान देलनि। अल्पावधिएमे डा. झा मैथिली भाषा साहित्यक लेल अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थक रचना कएलनि, जाहिमे "मैथिली व्याकरण ओ रचना", "मैथिली भाषाविज्ञान", "मैथिली साहित्यक इतिहास" (आदिकाल आ मध्यकाल), "पडोसिंआ" (अनुदित उपन्यास), विद्यापतिकृत "कीर्तिगाथा"क सम्पादन, "मैथिली निबन्ध वाटिका" तथा अंग्रेजी भाषामे एक मात्र आलोचनात्मक पोथी** "A Critical Analysis of Maithili Literary Essays" **अद्यावधि प्रकाशित भ चुकल अछि। एकर अतिरिक्त "कोसा"क सम्पादन** 2020 **सँ लगातार करैत आबि रहल छथि, जे क्रमश: कथा, कविता, आलोचना आ उपन्यासक रूपमे प्रकाशित भ चुकल अछि। कोसाक** 2026 **क अंक एकैसम सदीमे स्थापित करीब सएसँ बेसी साहित्यकारक व्यक्तित्व आ कृतित्व परक शोधालेख प्रकाशनाधीन अछि। संगहि डा. झाक करीब एक सए शोधपरक आलेख विभिन्न राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय जर्नलमे सेहो प्रकाशित छनि। समग्र रूपेँ डा. विजयेन्द्र झाक स्वाल्प समयमे कएल गेल मैथिलीक सेवा स्तुत्य अछि जाहि लेल मैथिली जगत् सदैव हिनक ऋणी रहत।**

बीज शब्द: A Critical Analysis of Maithili Literary Essay, **कीर्तिगाथा, कृतित्व, पडोसिंआ, भाषाविज्ञान, मैथिली व्याकरण ओ रचना, मैथिली साहित्यक इतिहास,**

मैथिली निबन्ध वाटिका, व्यक्तित्व, विजयेन्द्र झा, शोधालेख, शोध निर्देशन

कोनो भाषाक साहित्य पढब सहज अछि । ओकरा बुझब थोडे क दुरूह, लिखब सेहो अत्यन्त कठिन अछि, मुदा ओकर अंश बनब सभक भाग्यमे नहि होइत अछि। प्रत्येक व्यक्तिक अपन निज इतिहास होइत अछि। जीवन अछि तँ प्रयोजन सेहो होयत आ तकरा बुझबाक सेहो होयत आ ई सब जतए अछि, ततहिँ ओकर इतिहास गढल जाइछ। इएह इतिहास सजग मनुक्खक "व्यक्तित्व आ कृतित्वक"क रूपमे उभरिकेँ अबैत अछि। जीवन तँ मानवेतर प्राणीक सेहो होइछ, मुदा ओकर "कृतित्व आ व्यक्तित्व"पर कहाँ विचार कएल जाइछ?
व्यक्तित्व (Personality) व्यक्तिक आन्तरिक गुण, व्यवहार, स्वभाव आ आचरणकेँ प्रदर्शित करैत अछि, जखन कि कृतित्व (Creativity) क अर्थ व्यक्ति द्वारा कएल गेल काज, रचना, उपलब्धि आ उत्पादनक गतिविधिसँ अछि। व्यक्तित्व "ओ केहन अछि", से बुझबैत अछि आ कृतित्व ओ की कएलनि, से प्रदर्शित करैत अछि। दुनू परस्पर पूरक अवश्य अछि, मुदा एक दोसरसँ भिन्न होइछ।

I. व्यक्तित्व

प्रस्तुत आलेखक हमरालोकनिक प्रतिपाद्य विषय अछि, "विजयेन्द झाक व्यक्तित्व आ कृतित्व"। समकालीन मैथिली साहित्यमे एकटा एहन हस्ताक्षर जे एकहि संग वैयाकरण, भाषाविज्ञानी, इतिहासकार, अनुवादक, सम्पादक, अन्वेषक, निरवच्छिन्न वक्ता आ नेतृत्वकर्ता, लब्धप्रतिष्ठ प्राध्यापक तथा कुशल प्रशासकक भूमिकाक निर्वहन करैत छथि, ओ छथि डा. विजयेन्द्र झा। हिनक जन्म बिहारक मधुबनी जिलान्तर्गत घोघरडीहा प्रखण्डक बिरौल गाममे, भारद्वाज गोत्रीय एकहडे मूलक निम्न वर्गीय ब्राह्मण परिवारमे 30 दिसम्बर, 1964 ई.कें भेल छलनि। हिनक पिताक नाम पं. दुर्गानन्द झा आ माताक नाम श्रीमती अन्नपूर्णा देवी छनि। चारि भाए बहिनमे ई माता पिताक दोसर संतान छथि। हिनक बाल्यकाल अत्यन्त विपन्न स्थितिमे बीतल, कारण जीविकाक मूल स्रोत खेती छल, ताहूमे वासडीह समेत कुल दू बीघा जमीन। तेँ एक दिसि जँ छओ मासक खर्च बेसाहपर निर्भर छल, तँ दोसर दिसि नोन तेल, दबाइ, वस्त्र आदिक लेल रिनेक आसरा लेबय पडैत छल।

एहना स्थितिमे हिनक प्रारंभिक शिक्षा गामहिक प्राथमिक विद्यालयसँ प्रारंभ भेल। पाँचम कक्षाक पश्चात् चिकना मध्य विद्यालयसँ सातमा पास क आठम कक्षामे गामसँ करीब एक कोस दूर स्थित श्रीकेश्वर उच्च विद्यालय,कालिकापुरमे हिनक नाम लिखाओल गलनि, जत सँ सन 1981 ई. मे, द्वितीय श्रेणीमे मैट्रिक पास कएलनि। आब आगाँक पढाइक समस्या छल। मुदा, हिनका पढबाक इच्छा रहनि। ई जानि पिता हिनक नामांकन ललित नारायण जनता महाविद्यालय झंझारपुरमे विज्ञान संकायमे कराए देलथिन आ रहबाक लेल अपन संबंधीक ओतए व्यवस्था कराए देलथिन। मुदा, विज्ञान सन विषय आ ताहूमे बिना पोथीक पास करब अत्यन्त कठिन छल, आ सएह भेल। 1983 ई. मे ई आइ. एससी. मे फेल क गेलाह। परिवारक आर्थिक स्थितिक कारणेँ आब आगाँक पढाइ करब अत्यन्त दुरूह भ गेल। पिता तथा जेठ भाइक सहयोग सेहो नहिएँ जकाँ रहल, मुदा माएकेँ इच्छा छलनि जे ई आगू पढथि। एक दिन पिताक परोक्षमे माए कोनो टोल पडोसक जनी जातिसँ दू सए रुपैआ पैँच आनि हिनका हाथमे द कहलखिन जे ई लिअ आ जाउ,

अहाँ पढ़ूगे। ई एक बेर रुपैआकेँ देखथि आ एक बेर अपन माएक आँखिक आशाकेँ। सोचलनि जे आइ जँ हम नहि जाइ छी तँ माएक आशा खण्डि भ जाएत। तुरन्त टाका ल माएकेँ प्रणाम कए तैआर भ झंझारपुरक लेल प्रस्थान केलनि। चलबाकाल माए कहलखिन, बेटा! हमरा एतबे पाइक जोगार भ सकलौ, आब आगू कोनो आशो नै, बापो कत सँ अनथुन। जाउ मोनसँ पढब, आ खूब पढिकेँ आयब। ई सोचय लगलाह जे मात्र दू सए टाकामे माए कहै छथि पढाइ पूरा क कए आबक लेल। ई कोना सम्भव हएत? मुदा, माएक एहि विश्वासकेँ कोना तोडि सकैत छलाह। माएक ई शब्द हिनका कानमे जिनगी भरि गूँजैत रहलनि, इएह शब्द हिनक संघर्षकेँ सदैव ऊर्जा प्रदान करैत रहल।

झंझारपुर पहुँचि मोहन लाजमे 50 टाका एडभान्स द एकटा रूम पार्टनरीमे ल पहिल राति खेपलनि। दोसर दिन अहल भोरे उठि, तैयार भ झंझारपुरक पुरना बजारसँ ल टीशन धरि समस्त प्राइवेट इसकुलक शिक्षक, प्राचार्यसँ सम्पर्क केलनि। ई सम्पर्क अभियान तीन चारि दिन धरि आशा निराशाक ऊहापोहमे चलैत रहलनि। बीच बीचमे माएक ओ ध्वनि कानमे गूँजैत छल, बेटा, एतबे जोगार भ सकलौ, आब नै भ सकतौ, मोन लगाएकेँ खूब पढिकेँ आएब। अन्ततः थाना चौकपर ज्ञानोदय पब्लिक इसकुल मे 150 टाका मासिकपर मास्टरी भेटलनि, मुदा ओत करीब 10 घंटा समय लगैत छलनि, तेँ कालेज जेबाक अवसर कहिओ नहि भ सकल। सन 1985 मे विज्ञान विषयसँ कोनहुँना इन्टरक फाटककेँ तोडलनि। पश्चात् सी. एम. कालेज दरभंगासँ स्नातक मैथिली प्रतिष्ठा 1988 ई.मे आ पटना कालेज पटनासँ स्नात्कोत्तर 1993 ई.मे, मैथिली विषयसँ, प्रथम वर्गमे प्रथम स्थानसँ उत्तीर्ण भेलाह तथा एही वर्ष यूजीसी नेट परीक्षा सेहो पास कएलनि। एहि बीच एक बेर बिहार प्रशासनिक सेवाक मुख्य परीक्षा आ संघ लोक सेवा आयोगक प्रारंभिक परीक्षा सेहो पास कएलनि, मुदा अन्तिम रूपसँ ओहिमे चयनित नहि भ सकलाह। मुदा हिनका समस्त छात्र जीवनमे झंझारपुरसँ ल पटना धरि अपन उदर पोषणक हेतु स्वयं संघर्ष करए पडलनी, जकर निदान ओ प्राइवेट ट्यूशनसँ करैत छलाह।

माएक ओ वचन तँ पूरा भेल जे पूरा पढिकेँ आयब, मुदा पारिवारिक स्थिति आ स्थाइ कमाइक स्रोतक जोगारक कोनो आशा नहि देखि, हारि थाकि 14 नवम्बर, 1995 केँ ई सरकारी नोकरीक आश त्यागि, महेन्द्रू (पटना) क ओहि 80 वर्गफीटक संकीर्ण कमराकेँ प्रणाम करैत दिल्ली प्राइवेट नोकरीक खोजमे प्रस्थान क गेलाह। प्राइवेट नोकरीक एहि यात्रामे ई विभिन्न राज्य दिल्ली,हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, तमिलनाडू आ अन्तमे ययावरी जीवन बितबैत अपन स्थायी निवास दिल्लीमे बनओलनि, परिवारकेँ आर्थिक रूपेँ सुदृढ कएलनि। पिताक पूर्वक कर्ज सधओलनि आ अपन बाल बच्चा, भाए भातीज, गाम घरक अडोसिआ पडोसिआ सभक लेल दिल्ली प्रवासमे सतत एकटा स्तम्भक रूपमे ठाढ रहलाह।

एतबा दिनमे आर्थिक रूपेँ सुदृढ भ चुकल छलाह, तेँ अनेक व्यापार कएलनि जेना, फुटमेट कुटिर उद्योग, आढत, सेक्यूरीटी कम्पनी, ट्रान्सपोर्ट कम्पनी आदि। एहिमे सफलो भेलाह; मुदा, पश्चात् मधुमाछी जकाँ लुधकल अपनहिँ लोकक विश्वासधातक कारणेँ व्यापारमे घाटा लागि गेलनि तँ ओकरासभकेँ त्यागि 12 अप्रैल 2016 केँ बीपीएससी द्वारा चयनित भ बाबासाहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालयक अंगीभूत

एकाइ ललित नारायण तिरहुत महा विद्यालयमे अपन 49 वर्षक अवस्थामे मैथिलीक सहायक प्राध्यपकक रूपमे योगदान दलनि। विगत दस वर्षक एहि सेवा अवधिमे डा. विजयेन्द्र झा महाविद्यालयक पुस्तकालय प्रभारी, नामांकन प्रभारी, एन. एस. एस. पदाधिकारी, परीक्षा नियंत्रक, अर्थपाल तथा दू खेप प्राचार्यक पदक जिम्मेदारीक निर्वहन एकटा कुशल प्रशासकक रूपमे क चुकल छथि। वर्तमानमे डा. झा ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालमे मैथिलीक विभागाध्यक्ष आ बिहार विश्वविद्यालयक अधिसभा सदस्य (सीनेट सदस्य) आ शिक्षक संघ (बुटा) क सचिव (मुजफ्फरपुर जिला एकाइ) छथि।

एहि लघु कालखण्डमे एहन नहि जे डा. झा मात्र उपर्यूक्त कार्य योजने मे ओझराएल रहलाह, ओ अपन आकादमिक व्यक्तित्वकेँ सेहो समृद्ध करैत रहलाह। वर्ष 2020 मे डा. अमरनाथ झाक निर्देशनमे "मैथिली लोकसाहित्यक समाजशास्त्रीय अध्ययन" विषयपर विद्यावारिधि (पीएच. डी.) क उपाधि बिहार विश्वविद्यालयसँ प्राप्त कएलनि, जकर वाह्य परीक्षक डा. इन्द्रकान्त झा आ डा. उदयनाथ झा अशोक छलथि। पश्चात् मौलिक, अनूदित आ सम्पादित कुल सात गोट रचना; संगहि, मैथिलीक प्रामाणिक, प्रतिष्ठित आ विद्वत् समीक्षित मैथिली शोध पत्रिका "कोसा"क संम्पादन वर्ष 2020 ई.सँ निरवच्छिन्न गतिएँ करैत आबि रहलाह अछि। कारयित्री आ भावयित्री प्रतिभा सम्पन्न, एकैसम शताब्दीक तेसर दशकमे मैथिली भाषा साहित्यक सृजनशील आ मननशील प्रतिभाक धनी, दिशाबोधक, समालोचना आ अनेक सैद्धान्तिक ग्रन्थक रचयिता डा. विजयेन्द्र झा सदृश तपस्वी, मनस्वी आ साधक चिन्तक समकालीन मैथिली जगतमे भेटब दुर्लभ अछि। ई अपन बहुआयामी प्रतिभाक बलेँ विविध साहित्यिक, सैद्धान्तिक आ विभिन्न अमूल्य ग्रन्थोपहारसँ मैथिली साहित्यक भंडारकेँ श्रीवृद्धि करैत आबि रहल छथि। डा. झा अत्यन्त लघु कालावधिमे एक सफल समीक्षक, अनुसंधानकर्ता, मैथिली व्याकरण, भाषाविज्ञान, इतिहासक अगाध अध्येता, सफल अनुवादक, गद्यकार, निबन्धकार, संपादन कलामे निष्णात आ मैथिली भाषा साहित्यक लब्धप्रतिष्ठ विद्वानक रूपमे, मैथिली जगतमे, अपन यश कीर्ति अर्जित क चुकल छथि। हिनका मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी भाषापर समान रूपे अधिकार छनि, जकर प्रामाणिकता हिनक मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीमे राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नलमे प्रकाशित अनेक विद्वत् समीक्षित शोधालेख आ अंग्रेजीमे आलोचनापरक मौलिक रचनासँ भेटि जाइछ। हिनक जीवनक क्रिया कलाप, साहित्यिक सामाजिक गतिविधि, अनुसंधानक सचेष्टताकेँ देखैत डा. फूलचन्द्र मिश्र रमण हिनक मैथिली व्याकरण ओ रचनाक सुभाशंसामे अपन विचार व्यक्त करैत लिखैत छथि "डा. झा केहन अँखिगर छथि, कोनो विषयकेँ कोना अँखियासि क देखैत छथि आ बिटिया क ओकरा धरैत छथि आ कोना फरिछा क ओकरा उपस्थित करैत छथि तकर साक्ष्य प्रत्येक परिच्छेदमे देखल जा सकैत अछि।"

यथार्थमे डा. झा एक कर्मयोगी छथि जे अपन रचना कर्म प्रारम्भ तँ कएलनि मैथिली भाषा साहित्यक खगता पूर्तिक उद्येश्ये, मुदा जखन 9 नवम्बर, 2023 केँ हिनक होनहार आ प्रतिभाशाली अभियन्ता पुत्र दीपक कुमारक मात्र 24 वर्षक अवस्थामे, एकटा सडक दुर्घटनामे असामयिक निधन भ गेल तँ हिनका सांसारिक मोह मायासँ विरक्ति भ गेलनि आ ई एकमात्र अपन आराध्य "राधारानी"क अनन्य भक्त बनि हुनक

शरणागत भ स्वान्तः सुखाय हेतु सतत मा मैथिलीक सेवा क रहल छथि।

II. कृतित्व

मैथिली साहित्य जगतमे डा. विजयेन्द्र झाक व्यक्तित्व जहिना बहुआयामी अछि तहिना हिनक कृतित्व सेहो विविधतासँ भरल अछि। ई मैथिली भाषा साहित्यक ओहि विधासभकेँ पकडलनि जकर खगता मैथिलीकेँ छल। आइ हिनक काजक बदोलति मैथिली भाषा कोनो समृद्धशाली भाषासँ न्यून नहि अछि, झूस नहि अछि। हिनक रचनाक सूचीमे पाँचटा मौलिक कृति, एकटा अनूदित आ एकटा सम्पादित कृति मैथिली साहित्यक ओहि खगताक पूर्ति कएलक जकर तत्कालीन समयमे नितान्त आवश्यकता छल। हिनक मौलिक कृतिमे

"मैथिली व्याकरण ओ रचना (2021)," **"मैथिली भाषाविज्ञान"** (2022), **"मैथिली साहित्यक इतिहास (आदिकाल आ मध्यकाल,** 2023**), "**A Critical Analysis of Maithili Literary Essays " (2026) **तथा "मैथिली निबन्ध वाटिका"** (2026) **अद्यावधि प्रकाशित अछि। अनूदित कृतिमे "पडोसिआ"** (2023) **उपन्यास आ सम्पादनक रूपमे विद्यापतिकृत "कीर्तिगाथा"** (2025) **सेहो प्रकाशमे आयल अछि; संगहि विद्वत् समीक्षित विविध विधापरक वार्षिक मैथिली शोध पत्रिका "कोशा"क सम्पादन सेहो ई लगातार** 2020 **ई. सँ क रहलाह अछि। एकर अतिरिक्त हिनक मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीमे कुल मिलाए करीब एक सए शोधालेख अन्तरराष्ट्रीय शोध पत्रिकासभ** (International Research Journals) **मे सेहो प्रकाशित छनि।**

III. मौलिक रचना

मैथिली व्याकरण ओ रचना (2021)

डा. विजयेन्द्र झाक पहिल मौलिक कृति "मैथिली व्याकरण ओ रचना" प्रतिभा प्रकाशन, मुजफ्फरपुरसँ 2021 **ई. मे प्रकाशित भेल छलनि। मैथिली जगतमे एकर स्वागत सत्कार ताहि रूपेँ भेल जे सालहि भरिमे एकर सभ प्रति निँघटि गेल। पश्चात् माण्डा पब्लिकेशन, दिल्लीसँ एकर पुनर्मुद्रण** 2025 **मे कराओल गेल जे सोसल मीडियाक विविध विक्रय प्लेटफार्मपर सेहो उपलब्ध अछि आ एहिसँ छात्र छात्रा, शोधार्थी तथा मैथिलीक सुधीपाठकगण उपकृत भ रहल छथि।**

करीब 650 **पृष्ठक "मैथिली व्याकरण ओ रचना"** 56 **परिच्छेदमे विभक्त अछि, जाहि मध्य मैथिली व्यकरण आ रचना सान्दर्भिक प्रायः प्रत्येक अंग उपांगक विस्तृत विवेचन कएल गेल अछि। एहि पोथीमे मैथिली भाषाक व्याकरणिक आ रचनाक प्रसंग सोदाहरण वर्ण पद वाक्य प्रकृति प्रत्यय सन्धि समास कारक शब्दार्थ वैशिष्ट्य वाग्धारा लोकोक्ति**

विराम काव्य छन्द भावविस्तार अर्थप्रकाश संक्षेपण अनुच्छेदलेखन अनुवाद सरलार्थ आशय सारांश व्याख्या निबन्धक रूप ओ तत्व पत्र लेखनक प्रकार इत्यादि समस्त सामग्रीक निरूपण वैज्ञानिक रीतिएँ कएल गेल अछि। प्रस्तुत पोथीक प्रामाणिकता एहीसँ सिद्ध होइछ जे एकर शुभाशंसा स्वरूप मैथिली साहित्य जगतक उद्भट विद्वान् आ महामनीषीलोकनि अपन अपन मन्तव्य मुक्त कण्ठसँ कएने छथि। एहि पोथीक प्रसंग मिथिलाक महामनीषी पंण्डित गोविन्द झाक उद्गार द्रष्टव्य अछि

"डा. विजयेन्द्र झाक लिखल 646 पृष्ठक विशालकाय पुस्तक मैथिली व्याकरण ओ रचना देखल ओ यत्र तत्र पढल। विशालता, विशुद्धता, आ उपयोगिता तीनू दृष्टिएँ बड प्रशंसनीय अछि। हम जे काज सूत्र रूपमे कएल तकर ई महाभाष्य बूझू।"

प्रस्तुत पोथीक प्रसंग पंडित शशिनाथ झाक ई कामना छनि जे, "एहि महत्वपूर्ण व्याकरण ग्रन्थक समादर मैथिली जगतमे अवश्य होएत।" डा. विजयेन्द झा मैथिली व्याकरण ओ रचना व्याकरणिक विकीपीडिया थिक जकर प्रामाणिकता एहि पोथीक प्रसंग डा. देवेन्द झाक निम्न उद्वारसँ स्पष्ट भ जाइछ

"स्थालीपुलक न्यायेन एतबा धरि तँ स्पष्टे बुझाइत अछि जे एहिसँ छात्र शिक्षक एवं जिज्ञासुलोकनिकेँ एकेठाम सभ सामग्री अवश्ये अछोँ क देतनि। ओना एहिसँ पूर्व जतेक पोथी व्याकरण विषयक लिखल गेल छैक तकर सविस्तार चर्चा एहि पुस्तकक विषय प्रवेशमे देलो गेल छैक जकर नामक उल्लेख करब मात्र पृष्ठपेषण होयत, मुदा मैथिलीक छात्रलोकनिकेँ ई ग्रन्थ सर्वाधिक उपयोगी हेतैक से हमरा पूर्ण विश्वास अछि, कारण एहिमे एकेठाम सभ सामग्रीकेँ समेटि कय राखि देल गेल छैक।"

एहि मैथिली व्याकरणक पोथीक वैशिष्ट्य, विषय वैविध्यक विशालतापर प्रकाश दैत डा. इन्द्रकान्त झा लिखैत छथि, " डा. विजयेन्द्र जी मैथिली भाषा संसारमे व्याकरणरूपी नव वटवृक्ष रोपलनि अछि। ओकर प्रत्येक शाखा प्रशाखामे विषयगत विचारक अंगुरक गुच्छा जकाँ व्याकरणक सामग्रीकेँ सजओलनि अछि। व्याकरणक गाछक किछु डारिकेँ काव्यशास्त्री बनएबाक प्रक्रियारूपी विषयक फलसँ जे रस टपकल ओकर पान जे करत ओ साहित्य जगतमे अपन ख्याति पसारत। प्रो. विजयेन्द्र झा व्याकरणक पहिल लेखक छथि जे एतेक सामग्रीकेँ एकठाम पाठकक थारीमे परोसि कय जे भव्यता प्रदान कयलनि अछि ओ सराहनीय आ प्रशंसनीय अछि।"

एहिना प्रस्तुत पोथीक प्रसंग डा. फूलचन्द्र मिश्र रमण अपन विचार व्यक्त करैत लिखैत छथि जे, "डा. विजयेन्द्र झाक मैथिली व्याकरण ओ रचना वृहत्कायमे आयल अछि। एहि पोथीक विषय वस्तुक संचयनमे लेखक प्रो. विजयेन्द्र झाजी अपन बौद्धिक उदारताक विशिष्ट परिचय देलनि अछि। साढे छः सय पृष्ठक ई पुस्तक 56 परिच्छेद (अनुभाग वा पाठ) मे बाँटल अछि,जाहिमे व्याकरणक आवश्यक विषय वस्तुक उपस्थापनक संगहि काव्य ओ छन्दक सोदाहरण विवेचन तथा रचनाक प्रकार ओ अनुवाद आदि उदाहरण सहित प्रस्तुत कएल गेल अछि।"

समग्र रूपेँ देखल जाए तँ डा. विजयेन्द्र झाक मैथिली व्याकरण ओ रचना मैथिली भाषा साहित्यक एकटा अमूल्य निधि थिक। एहि कोटिक आ एतेक विस्तृत रूपेँ अद्यावधि प्रायः आन कोनो भाषामे पृथक् व्याकरण विषयक पोथी उपलब्ध नहि अछि। अद्यावधि मैथिलीओ मे जतेक व्याकरणक पोथी प्रकाशमे आयल अछि ओ एक तँ अत्यन्त लघुकाय आ दोसर ओकरा सबहिक अनुपलब्धता, जकर क्षतिपूर्ति क प्रो. विजयेन्द्र झा मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध तँ करबे कएलनि; संगहि इहो कहि दी जे जँ ओ मात्र एकहिँटा ई पोथी लिखि बैसि जइतथि, तैओ ओएह यश कीर्ति प्राप्त कए अपन नाम मैथिली साहित्यक इतिहासक पन्नामे स्वर्णाक्षरमे लिखए लितथि। डा. झाक एहि स्तुत्य कार्यक हेतु मैथिली जगत् सदैव ऋणी रहत।

मैथिली भाषाविज्ञान (2022)

डा. विजयेन्द्र झाक दोसर मौलिक कृतिक रूपमे, 2022 ई. मे "मैथिली भाषाविज्ञान" प्रकाशमे आयल। करीब 1000 पृष्ठक एहि पोथीकैँ अठारह प्रकरणमे विभक्त कएल गेल अछि, जे प्रतिभा प्रकाशन मुजफ्फरपुरसँ प्रकाशित अछि। एहि पोथीक सुभाशंसा राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय स्तरक ख्यातिनामा विद्वान् आ भाषाविज्ञानीलोकनि कएने छथि, जाहिमे डा. शशिनाथ झा, डा. रामावतार यादव, डा. इन्द्रकान्त झा, डा. उदय नारायण सिंह नचिकेता, डा. अवधेश कुमार मिश्र, डा. फूलचन्द मिश्र रमण आदि छथि। अठारह प्रकरणमे विभक्त एहि पोथीक अन्तिम अंशमे परिशिष्टक अन्तर्गत संक्षेपाक्षर आ ग्रन्थसूची देल गेल अछि। पहिल प्रकरणमे भाषाविज्ञानक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः भारतीय परम्परा आ दोसर प्रकरणमे पाश्चात्य परम्पराकैँ राखल गेल अछि। तेसर आ चारिम प्रकरणमे भाषाविज्ञानक परिचय, प्रकार आदिक सैद्धान्तिक पक्ष सबहिक विवेचन कएल गेल अछि। पाँचमसँ नओम प्रकरण धरि भाषा सम्बन्धी विविध पक्षक विश्लेषण अछि। दसम तथा एगारहम प्रकरणमे डा. झा ध्वनिविज्ञान तथा ध्वनिनियमपर प्रकाश दए ई बुझेबाक प्रयास कएलनि अछि जे भारोपीय परिवारक समस्त भाषामे परस्पर विशेष प्रकारक सम्बन्ध अछि। एकरा लेल लेखक ग्रिम, ग्रेसमैन आ वर्नर आदिक ध्वनि नियमक माध्यमे मूल भारतीय भाषा आ जर्मन, गाथिक भाषा मध्य सोदाहरण सम्बन्धकैँ बुझओलनि अछि; संगहि पूर्वक ध्वनिशास्त्रीलोकनिक सिद्धान्त सबहिक विवरण सेहो प्रस्तुत कएलनि अछि। बारहमसँ सोलहम प्रकरण धरि क्रमशः शब्दविज्ञान, रूपविज्ञान, व्युत्पत्तिविज्ञान, वाक्यविज्ञान तथा अर्थविज्ञानक विविध पक्षक विवेचन कएने छथि। अपन एहि पोथीक सतरहम प्रकरणमे डा. झा व्याकरणिक आ अठारहम प्रकरणमे लैपिक आ शिलालेखकीय विषयकैँ अत्यन्त वैज्ञानिक रीतिएँ उपस्थापित कएने छथि।

लिपिक प्रसंग डा. झा पूर्वक समस्त विद्वानक एहि विचारकैँ खण्डित करैत छथि जे, "तिरहुता लिपिक पूर्वक लिपि प्राचीन नागरी लिपि थिक", एकरा खण्डित करैत ओकरा स्थानपर "पूर्वी कुटिल लिपि"कैँ रखैत छथि आ "तिरहुता लिपि"कैँ नागरी लिपिक सहोदर बहिनि मानि शारदा, नागरी आ तिरहुताकैँ कुटिल लिपिसँ विकसित होयब स्थापित कएलनि अछि। मुदा, कैथी लिपिक प्रसंग मौन रहि भावी अनुसंधित्सुक लेल शोध कार्य छोडि देलनि अछि। भाषाविज्ञानकैँ परिभाषित करैत लेखक डा. झा स्वयं लिखैत छथि जे, "भाषाविज्ञान कोनो भाषाक एकटा एहन पंजी थिक जाहिमे ओहि भाषाक उद्भव आ विकासक विस्तृत विश्लेषण कएल गेल रहैछ। संगहि एहिमे भाषा अध्ययनक गतिशीलता आ विकासात्मकताक प्रस्फुटन देशकालक वातावरणमे होइत अछि।"

डा. विजयेन्द्र झाक भाषाविज्ञानक प्रसंग डा. शशिनाथ झा अपन विचार व्यक्त करैत लिखैत छथि, "मैथिली भाषाविज्ञान नामक अतिविशाल पुस्तक अठारह प्रकरणमे विभक्त लगभग 1000 पृष्ठक तैयार कए विशाल मैथिली व्याकरण क यशस्वी लेखक डा. विजयेन्द्र झा मैथिली भाषाक महत्वपूर्ण कार्य कएलनि अछि। एहिमे भाषाशास्त्रीय सामान्य सिद्धान्तक सांगोपांग विवेचनक संग मैथिली भाषाक तात्विक विवेचन भेल अछि। एहि बहुआयामी ग्रन्थक उपादेयता छात्र, परीक्षार्थी, शोधार्थी, प्राध्यापक ओ अन्य जिज्ञासुक लेल समान रूपसँ अछि।" पुनः एहि पोथीक वैशिष्ट्यक प्रसंग शशिनाथ बाबू लिखैत छथि, " प्रत्येक

बिन्दुकेँ विस्तृत विश्लेषणक संग प्रस्तुत करब एकर विशेषता थिक। विशेषतः मैथिली उदाहरणसँ तकरा सम्पुष्ट कएल कएल गेल अछि। मत मतान्तरक संग निष्कर्ष दए पाठकक सौविध्यक पूर्ण ध्यान राखल गेल अछि।"

प्रस्तुत पुस्तकक प्रसंग अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिनामा भाषाविज्ञानी डा. रामावतार यादव A Few Words on Bijayendra Jha s **मैथिली भाषाविज्ञान मे अपन उद्गार व्यक्त करैत लिखैत छथि, "*मैथिली भाषाविज्ञान*** is a sound primer for the beginner on what is linguistic written in the medium of immaculate Maithili. Bijayendra Jha, nonetheless, deserves immense praise and admiration for producing this voluminous work on General Linguistics in Maithili through hard work. Indeed, a younger linguist to reckon with in North India."

डा. विजयेन्द्र झाक मैथिली भाषाविज्ञानक संदर्भमे अपन व्यंजना शक्तिक उपयोग करैत प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. उदय नारायण सिंह नचिकेता क विचार द्रष्टव्य अछि " व्याकरण पाठे मे त्रयोदश वर्ष काल लागि जाय छइ से हमरा परम्परासँ पता चलै अछि मुदा व्याकरण रचना त एकटा भरि जीवन अथवा एना कही त जीवन भरिक प्रकल्प भ सकैत अछि। कोना कियो एहन दुरूह कार्य लेल साहस आ सामग्री जुटौलक सैह एकटा आश्चर्यक गप्प थिक। तेँ हमरा त भाषा ज्ञानी तथा भाषा विज्ञानी केर रूपमे विजयेन्द्रजीक प्रति मात्र ईर्ष्या केर भावने होइत अछि। एहन पोथी जतय प्राच्य आ पाश्चात्यक परम्परा केर सन्मिलन भेल हो, जकरा पढैत पढैत विद्यार्थी केँ आन दसटा पोथी आर देखबाक प्रयोजन नहि होयतन्हि तकर आजुक जमाना मे अलगे महत्त्व होइ छइ।"

डा. झाक मैथिली भाषाविज्ञान क प्रसंग डा. नचिकेताक कथन सर्वथा उचित छनि। एहि भाषाविज्ञानमे ततेक ने सामग्री लेखक एकठ्ठा कएलनि जे यथार्थमे भाषाविज्ञान सान्दर्भिक आन कोनो पोथीक खगता पाठकलोकनिकेँ नहि पडतनि। तेँ भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक पूर्व निदेशक प्रो. अवधेश कुमार मिश्रक ई उक्ति "मैथिली भाषाविज्ञानक क्षेत्रमे एहि प्रकारक उत्तम ग्रन्थ लिखि डा विजयेन्द्र झा मैथिली भाषाक अध्येता जिज्ञासु पाठकलोकनिक खगताक पूर्तिए नहि कएलनि अछि, अपितु समस्त उत्तर भारतीय आधुनिक आर्यभाषा मध्य स्वयंकेँ एकटा भाषावैज्ञानिकक रूपमे स्थापितो कएलनि अछि", पूर्णतः समीचीन बुझाइत अछि। प्रस्तुत पोथीक विषय वैविध्य आ प्राचीनता वैदिककालीन भाषासँ उठाओल गेल अछि आ वर्तमानक सीमाकेँ पार करैत सांकेतिक रूपेँ भविष्यक भाषा स्वरूपकेँ सेहो रेखांकित करैत अछि जाहिसँ विद्वान् लेखकक पुरातन आ अर्वाचीन दृष्टिबोधक परिचय भेटैत अछि। एहि तथ्यक सम्पुष्टि डा. इन्दकान्त झाक जीवेत् शरदः शतम् मे देल गेल विचारसँ पूर्ण भ जाइछ "डा विजयेन्द्र झाक मैथिली भाषाविज्ञान केँ आद्योपान्त अवलोकनोपरान्त मन प्रफुल्लित भए गेल। एकर उपस्थापनमे जतेक विलक्षणता छैक, बारीकी छैक ओ एखन धरि मैथिलीक कोनो भाषाविज्ञानमे दृष्टिगोचर नहि भेल अछि। कुल अठारह प्रकरणमे सम्पूर्ण भाषाविज्ञानक तत्त्व निदर्शन अत्यधिक प्रेरणादायक लागल। एहिमे भारतीय परम्परामे भाषाविज्ञानक विभिन्न विषयक स्वरूप आ पाश्चात्त्य भाषाविज्ञानक विकासकेँ स्पष्ट आ सरल शब्दमे व्याख्यायित कएल गेल अछि। डा. झाक वृहदाकार भाषाविज्ञानक आगू भारतीय अन्यान्य बहुत भाषाविज्ञान झूस लागत। एहि क्रममे हम देखैत छी जे

मैथिली भाषा साहित्यमे अद्यावधि जतेक भाषाविज्ञान अछि ताहि सभसँ विकसित ई भाषाविज्ञान छैक। एकर प्रथम प्रकरणमे प्रबुद्ध लेखक भाषाविज्ञानक जडिकेँ वेदमे सेहो तकबाक सफल प्रयास कएने छथि, जाहिसँ एकर प्राचीनता सिद्ध होइत अछि।"

मैथिली भाषाविज्ञान क प्रसंग संस्कृत, मैथिली आ हिन्दीक उद्भट विद्वान् डा. फूलचन्द्र मिश्र रमण अपन मंतव्य जाहि रूपेँ उपस्थित कएलनि अछि ओहिसँ विद्वान् भाषाविज्ञानी डा. विजयेन्द्र झाक व्यक्तित्व आ कृतित्व दुहू पक्षमे अलौकिक ऊर्जा प्रतिबिम्बित होइछ, जाहिसँ हुनक रचना स्वतः विशिष्ट बनि जाइछ।

मैथिली साहित्यक इतिहास (2023)

डा. विजयेन्द झा द्वारा प्रणीत "मैथिली साहित्यक इतिहास" प्रतिभा प्रकाशन, मुजफ्फरपुरक सौजन्ये 2023 ई.मे, प्रकाशमे आयल। करीब 1000 पृष्ठक प्रस्तुत इतिहास नओ अध्यायमे विभक्त अछि। एहि पोथीमे मात्र आदिकाल आ मध्यकाल समाहित अछि, संगहि पोथीक अन्तमे परिशिष्टक अन्तर्गत सहायक ग्रन्थ सूची आ लेखकक वंशावली उल्लिखित अछि। प्रस्तुत ग्रन्थमे मैथिलीक आदिकाल आ मध्यकालक सामग्रीकेँ परम्परागत इतिहास लेखनक पद्धतिसँ फराक नब आ वैज्ञानिक रीतिएँ उपस्थित कएल गेल अछि। डा. झा पाठकलोकनिकेँ ध्यानमे रखैत, अधुनातन अन्वेषणक संग एहि पोथीक विषयक्रम सुलभ,सरल आ उपयोगी बनओलनि अछि तथा इतिहासक महत्वपूर्ण प्रकरणसभकेँ पृथक् पृथक् शीर्षक दए उपस्थापित कएलनि अछि। एहिमे रचनाकालक समस्त इतिहासक क्रमबद्धताकेँ वैज्ञानिक रीतिएँ एहि ढंगसँ सजाओल गेल अछि, जाहिसँ पाठककेँ अनुक्रम देखितहि एकर उपादेयताक अनुभव भ जाइत अछि। स्थान स्थानपर साहित्यिक विशिष्ट प्रवृत्तिक सम्यक् विवेचनक संग महत्वपूर्ण साधक आ रचनाकारपर विचार सेहो भेल अछि। अतएव, एहि ग्रन्थमे साहित्यिक प्रवृत्तिक संगहि साहित्यकारक अध्ययन सेहो काम्य होइछ।

मैथिली साहित्यक पहिल अध्याय एकटा नूतन प्रयोग थिक। एहिसँ पूर्व प्रकाशित एकहुँटा मैथिली साहित्यक इतिहासमे "साहित्येतिहास" प्रसंग किछु नहि कहल गेल अछि। इएह डा. झाक दूरदृष्टि थिक। एकर शीर्षक मिथिला आ मैथिली साहित्येतिहास मध्य इतिहासक अर्थ, स्वरूप, दर्शनक रूपरेखा तथा भारतीय आ पाश्चात्य दृष्टिकोनकेँ लेखक वैज्ञानिक रीतिएँ प्रस्तुत कएलनि अछि; संगहि, साहित्येतिहास आ साहित्यालोचन, भाषागत सीमा, मिथिलाक सांस्कृतिक आ साहित्यिक परम्परा, पंजी प्रथा आदिकेँ लेखक उपस्थित कएने छथि। चूकि डा. झा स्वयं भाषाविज्ञानी छथि, तेँ दोसर अध्याय भाषा आ लिपि सान्दर्भिक रखलनि। एकरा अन्तर्गत मैथिली भाषा, विभिन्न बोली, अन्य भाषाक संग मैथिलीक तुलनात्मक विश्लेषण, वर्तनी निर्धारण आदिक समावेश कएलनि अछि। तेसर अध्यायमे काल विभाजन आ साहित्यक रूप विधा वर्णित अछि। चारिमसँ छओम अध्याय क्रमशः पूर्व आदिकाल, उत्तर आदिकाल,, प्राचीन आ मध्यकालीन गीत परम्पराकेँ स्थान देलनि अछि। चारिम अध्याय मध्य समस्त मैथिली साहित्यक आदिकालीन सामग्री डाकवचन, चर्यापद, लोकसाहित्य आदि तथा मैथिली साहित्यक बीजारोपण आ प्रस्फुटनक मौखिक आ लिखित साक्ष्यक अन्वेषण कएल गेल अछि। पाँचम अध्यायमे ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ हुनक समकालीन आ परवर्ती कविगणक विमर्श लेखक अति सरल

बोधगम्य भाषामे सुव्यवस्थित रीतिएँ प्रस्तुत कएने छथि। छठम अध्यायमे उत्तर आदिकालसँ ल मध्यकालक समस्त गीतिकाव्यक परम्पराकेँ उपस्थापित कएने छथि। मुदा, जँ दुनू कालखण्डक गीतिपरम्परा पृथक् पृथक् रहैत तँ पाठक भ्रमित नहि होइत। मुदा, एहि प्रसंग लेखक डा. झा स्वयं स्पष्ट रूपेँ लिखैत छथि जे "एहिमे आदिकाल आ मध्यकालकेँ एकहि संग रखबाक विवशता भ गेल, कारण विद्यापतिक गीतिकाव्यक अश्रि(धार) आ परम्पराक प्रवाह ततेक ने तीव्र आ चोखगर छल जे मध्यकालक बान्हकेँ तोडि, ओकरा आप्लावित करैत, यत्किंचित् पूर्व आधुनिककालमे सेहो पसरि गेल; जेना चन्दा झा, जीवन झा, विन्ध्यनाथ झा, गणनाथ झा, सत्यनारायण झा आदि धरि।"

प्रस्तुत ग्रन्थक सातम अध्याय पार्श्ववर्ती प्रान्तक मिथिली काव्य परम्परा अछि। एहिमे मिथिलाक पडोसी प्रान्त आ देश बंगाल, आसाम आ उडीसाक ब्रजबुलि साहित्य तथा नेपालक मल्ल दरबारसभमे विकसित गीतकाव्य, जे स्फुट आ संगीत नाटक दुनूक संक्षिप्त विवरण लेखक प्रस्तुत कएने छथि। पोथीक आठम अध्यायमे विविध मैथिली नाटक जेना, कीर्तनियाँ नाटक, अंकीया नाटक, आ नेपालक मैथिली नाटक सबहिक विकासक्रमक विवरण देल गेल अछि। पोथीक अन्तिम नओम अध्यायक शीर्षक मैथिली गद्य साहित्य क अन्तर्गत आलोच्यकालमे मिथिला, नेपाल आ आसाममे प्रयुक्त मैथिली गद्यक स्वरूपपर विद्वान् इतिहासकार प्रकाश देलनि अछि। एहिमे नाटकसँ इतर संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ पोथीसभमे अंकुरित मैथिलीक शब्द पद वाक्य तथा शिलालेखीय गद्य, प्राकृतपैंगलम्, वर्णरत्नाकर आ दैनन्दिन जीवनमे प्रयुक्त होमयबला चिट्ठी पत्री आदिक गद्य आ राजकीय अभिलेखादिक विमर्श संक्षिप्त रूपेँ कएल गेल अछि।

निष्कर्षतः डा. विजयेन्द्र झा अपन एहि इतिहासक पोथीमे लंकाक अशोक वाटिकामे जगज्जननी जानकीक संग हनुमानजीक त्रेतायुगक मानुषी भाषाक ओहि संवादसँ ल अठारह सए साठि ईस्वी धरिक मैथिली साहित्यक ऐतिहासिक परम्पराक सांगोपांग रूपेँ विवरण प्रस्तुत कएने छथि।

डा विजयेन्द्र झाक मैथिली साहित्यक इतिहास क प्रसंग डा. भीमनाथ झा लिखैत छथि, "शास्त्र आ साहित्यमे अध्यवसायक परिणामस्वरूपहि एहि प्रकारक ग्रन्थक रचना संभव छैक। हिनक एहि साधनाक सम्मान करैत छियनि।... इतिहासरस भरल मैथिली साहित्यक कलश कहब एकरा।" एहि पोथीक विषय वैविध्य आ विशालताक मुक्त कण्ठसँ प्रशंसा करैत राष्ट्रीय स्तरक ख्यातिनामा इतिहासकार डा. रत्नेश्वर मिश्रक मंतव्य द्रष्टव्य अछि " नौ अध्यायक एहि पोथीमे आधुनिक काल समाहित नहि छैक अन्यथा एकर कायाक कतेक विस्तार होइतैक से अकल्पनीय छैक, भयाओन तँ ई अखनहुँ छैके। तथापि, विश्वविद्यालयीय शिक्षाक विभिन्न स्तरक पाठ्यक्रम तथा लोक सेवा आयोगक परीक्षादिमे मैथिलीक विषयक रूपमे समावेशक संदर्भमे एहि पोथीक उपादेयता निस्सन्दिग्ध अछि।... मैथिली भाषा आ साहित्यक विकास क्रममे रुचि लेनिहारसभ मैथिली भाषी पाठक, अनुसन्धित्सु आ विद्वान् लेल ई पोथी कोनो तथ्यक स्पष्टीकरण आ पुष्टिकरण लेल परम सहायक भ सकैत अछि।"

IV. A CRITICAL ANALYSIS OF MAITHILI LITERARY ESSAYS (2026)

आलोचनात्मक पुस्तक डा. विजयेन्द्र झा द्वारा प्रणीत A Critical Analysis of Maithili Literary Essays अंग्रेजी भाषामे लिखल हिनक एक मात्र पुस्तक अछि, जकरा दस अध्याय (Chapter) मे विभक्त कएलनि अछि। 172 पृष्ठक एहि लघुकाय पोथीक प्रकाशन 2026 ई.मे जिज्ञासा प्रकाशन, गाजियाबादसँ भेल अछि। प्रस्तुत पोथीक पहिल अध्यायक शीर्षक "Antiquity and Development of Maithili Language & Literature" मे प्राचीन कालसँ ल अद्यावधिक मैथिली साहित्यक रूप रेखाक विवेचन लेखक कएने छथि। दोसर, तेसर आ चारिम अध्यायमे क्रमशः एकैसम शताब्दीक मैथिली उपन्यास, लघुकथा तथा कविताक विकासक्रमकेँ बुझाओल गेल अछि। पाँचम अध्याय "Vidyapati and his Kirtigatha" क पहिल भागमे विद्यापतिक प्रसंग आ दोसर भागमे हुनक अवहट्ठ रचना कीर्तिगाथा क प्रसंग तथ्यपरक विवरण प्रस्तुत कएलनि अछि। छठम अध्याय "Development of Maithili Novel: Pre Modern Era" मे पूर्व आधुनिककालीन मैथिली उपन्यासक उद्‌भव आ विकासकेँ लेखक सुव्यवस्थित रीतिएँ प्रस्तुत कएने छथि। सातमसँ दसम अध्याय धरि मैथिली लोकसाहित्य संबन्धी विषय वस्तुकेँ उपस्थापित कएल गेल अछि, जाहिमे लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकोक्ति, वाग्धारा आदि सान्दर्भिक शीर्षकक चयन रचनाकार कएने छथि। ई पोथी पूर्णतः छात्रोपयोगी आ संग्रहनीय अछि।

एहि पोथीक प्रसंग लेखक स्वयं अपन "Author s Note" मे लिखैत छथि "A Critical Analysis of Maithili Literary Essays has been divided into ten chapters, in which six chapters have been critically analysed on Maithili language and literature and four chapters have been analysed in the context of Maithili folk literature. The subject matter has been presented from an informative perspective, keeping students in mind. A bibliography has also been placed at the end of all the chapters, so that it can prove useful for students, researchers and teachers. It may be noted that a proper place has been given to all the works included in this book, most of which have already been published in International Research Journals so that students and researchers can be made aware of the techniques of writing articles in the International Journal." ओना तँ डा. झाक अंग्रेजी भाषक ई प्रथमहि पोथी थिक मुदा एकर सरल, सहज भाषा शैलीसँ एतबा तँ अवश्य जानि पडैछ जे ने मात्र मैथिली हिन्दी अपितु आंग्ल भाषापर सेहो हिनक मजगूत पकड छनि।

V. मैथिली निबन्ध वाटिका (2026)

डा. विजयेन्द्र झा प्रणीत 211 पृष्ठक आलोचनात्मक पोथी "मैथिली निबन्ध वाटिका" 2026 ई.मे जिज्ञासा प्रकाशन, गाजियाबादसँ प्रकाशित भेल छनि, जाहिमे एगारह गोट शोधपरक मैथिली निबन्ध संग्रहीत अछि। एहि पोथीक समस्त निबन्ध आलेख रूपमे, पूर्वमे विभिन्न विद्वत् समीक्षित अन्तरराष्ट्रीय शोध पत्रिकासभमे प्रकाशित करबओने छलाह, जकरासभकेँ एकट्ठा क पुस्तकक रूपमे प्रकाशित करबओलनि, जे एकर प्रामाणिकताकेँ पूर्णतः सिद्‌ध करैत अछि। पोथीक पहिल अध्यायक शीर्षक अछि "मैथिली भाषा साहित्य"। पोथीक भूमिकामे एहि अध्यायक प्रसंग डा. झा स्वयं लिखैत छथि " मात्र पाँच हजार शब्दक एहि अध्यायमे त्रेतायुगक ओहि मानषी भाषासँ ल संस्कृत, प्राकृत आ अवहट्ठक सीमाकेँ पार करैत, आइ मैथिली एकैसम सदी धरि पहुँचल अछि। मैथिली एतेक दीर्घ अन्तरालमे विभिन्न झंझावातकेँ सहैत अपन विकासक समस्त धाराकेँ

प्रवहमान रखलक। प्रस्तुत अध्याय मैथिलीक विकासक एही यात्राक झाँकी थिक। "एहि अध्यायमे एक दिसि लेखक जँ मैथिलीक उद्गम स्थलसँ परिचय करबैत छथि तँ दोसर दिसि ओकर विकास यात्रा, डाक, सिद्धसाहित्य, लोकसाहित्य, ज्योतिरीश्वर, विद्यापतिसँ ल हर्षनाथ झा धरि जाहि मध्य आसाम, नेपाल, बंगाल, उडीसामे विकसित मैथिली साहित्यक विवेचन सरल, सहज आ बोधगम्य भाषामे कएलनि अछि। संगहि समस्त आधुनिक कालक साहित्यक विविध प्रवृत्तिक विवेचन अत्यन्त सुव्यवस्थित रीतिएँ सेहो प्रस्तुत कएलनि अछि। निष्कर्षतः, प्रथम अध्याय मैथिली साहित्यक ऐतिहासिक रूपरेखा प्रस्तुत करैत अछि। दोसर आ तेसर अध्यायमे लेखक क्रमशः "सिद्धसाहित्य" आ "ज्योतिरीश्वरकृत" मैथिली धूर्तसमागमक मूल्यांकन कैं स्थान देलनि अछि। चारिम, पाँचम आ छठम अध्यायक शीर्षक क्रमशः विद्यापतिकृत "कीर्तिगाथा", "प्राच्य मैथिलीक गीत संगीत ओ ज्ञान विज्ञानक परम्परा" तथा "पंजी प्रथा : प्रासंगिता"कैं राखल गेल अछि। चारिम अध्यायमे कीर्तिगाथाक प्रयोजन, पाण्डुलिपि, वर्ण्य विषय, नामकरण, कीर्तिगाथा स्वतंत्र कृति, महत्व आ वैशिष्ट्य एवं कथानायक अर्जुन राएक प्रसंग विद्वान् लेखक गवेषणात्मक विश्लेषण प्रस्तुत कएने छथि। पाँचम अध्यायमे प्राचीन मैथिलीगीतक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विविध राग छन्द, महिलालोकनिक भूमिका आ मिथिलाक ज्ञान विज्ञानक परम्पराक प्रसंग सूत्रात्मक शैलीमे प्रकाश देल गेल अछि। पाँचम अध्याय मिथिलाक गौरवशाली परम्परा "पंजी प्रथा" सान्दर्भिक अछि, जाहि मध्य पंजीक उद्‌भव, प्रयोजन आ प्रासंगिकताक प्रसंग संक्षेपमे शोधात्मक जानकारी प्रस्तुत कएने छथि। सातमसँ दसम अध्याय क्रमशः "ब्रजबुलि साहित्यक स्वरूप आ
मूल्यांकन", "मनबोध आ हुनक कृष्णजन्म", "समकालीन मैथिली कविताक विविध प्रवृत्ति" तथा "तिरहुता लिपि आ ओकर वैशिष्ट्य" अछि। सातम अध्यायमे ब्रजबुलि साहित्यक उद्‌भव ओ विकास, बंगाल आसाम उडीसाक ब्रजबुलि साहित्यक वैशिष्ट्य तथा परस्पर पार्थक्यताकैं लेखक सरल, सहज आ बोधगम्य भाषामे प्रस्तुत कएलनि अछि। आठम अध्यायमे एक दिसि जत मनबोधकृत कृष्णजन्म क विषय वस्तु, भाषा आदिक चरचा कएलनि अछि, ओतहि दोसर दिसि एकर रचयिताक रूपमे पूर्वक चर्चित मनबोधसँ पृथक् करमहे रुचौल मूलग्रामक अन्य मनबोध नामधारी व्यक्तिकैं स्थापित करैत छथि। नओम अध्यायमे समकालीन मैथिली कवितामे विभिन्न वाद वा काव्यांदोलन तथा ओकर प्रवृत्तिगत वैविष्ट्यपर प्रकाश देल गेल अछि। दसम अध्याय तिरहुता लिपि सान्दर्भिक अछि तथा अन्तिम एगारहम अध्यायमे मैथिली लोकगीतक परिचय, विविध स्वरूप, वैशिष्ट्य आदिकैं अध्ययनक सौविध्यैं लेखक नीक जेकाँ विकछओने छथि।

VI. अनूदित रचना

पडोसिआ (2023)

डा. विजयेन्द्र झाक 316 पृष्ठक एक मात्र मैथिलीक अनूदित उपन्यास "पडोसिआ"2023 ई.मे भारत सरकारक सर्वोच्च साहित्यिक संस्था, साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित अछि। ई पोथी पी. केशवदेवकृत मलयालम उपन्यास अयलकार (साहित्य अकादेमीसँ 1967 ई. मे पुरस्कृत) क मैथिली अनुवाद थिक। पडोसिया उपन्यासमे केरलक तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक,

धार्मिक आ राजनीतिक उथल पुथलक यथार्थ चित्र उपस्थित कएल गेल अछि। पतनक गर्तमे धसैत पच्चाषी खानदान द्वारा ठाँनल झगडासँ प्रादुर्भूत नायर ईषवा संघर्ष, आन्दोलनक रूप पकडि लैत अछि। आन्दोलनक प्रमुख नेता कुय्यँुवरीतक बेटा बासु आ दिवाकरण, ओकर मित्र भास्कर कुरुप आ सुकुमारन नायरक व्यक्तित्व सराहनीय अछि। मंगलश्शेरी खानदानक गौरव बनाए कए राखएबाली सुमती अम्मा निकृष्ट काज (अवैध सम्बन्ध) करितहुँ पाठकगणक सहानुभूति बटोरबामे सफल होइत छथि। एहि पोथीक प्रसंग अनुवादक स्वयं लिखैत छथि जे “पडोसिआक कथामे जे व्यथा अछि ओ तत्कालीन समस्त भारतीय समाजक द्योतक थिक। सुखान्त उपन्यास पडोसिआ क प्रत्येक पात्रक चरित्र पाठकक मानस पटलकेँ झकझोडि दैत अछि।” पडोसिआ उपन्यासक कथानक, वातावरण, पात्रचरित्र आ घटनावली एहि रूपेँ उपस्थित कएल गेल अछि, जेना लगैछ जे ई दक्षिण भारतक नहि, अपितु मिथिले क कोनो गामक कथा होअए। दक्षिण भारतीय परिवेशमे विरचित रहबाक कारणेँ पात्र आ स्थानक नाम थोडे क क्लिष्ट अवश्य अछि; मुदा एकर पात्रानुसार भाषा शैली, शब्द विन्यास, वाग्धारा लोकोक्ति आदिक प्रयोग सुच्चा मैथिलीमे कएल गेल अछि जाहिसँ पाठककेँ मौलिक उपन्यासक भान होइत छनि। द्रष्टव्य अछि एकर भाषा शैलीक निम्न अंश

"के हुलकी दैत छेँ रौ?” एकटा घनघोर गरजन छल ओ। मंगलश्शेरी घरानाक दलानपर राखल बडका आराम कुरसीसँ ओ शब्द उठल छल। फाटकक भीतर दिसि हुलकी मार बला कुय्यँुवरीत डरिकए कने पाछू हटल। बच्चाकेँ कोरामे नेने सारा मद्धिम स्वरमे कहलकः जाए ने होइ छै ओने, कियो पकडिकए गीडि थोडे जेतै। चल बाउ चल कुय्यँुवरीतक बेटा बर्की ओकर हाथ पकडिकए घिचलक। कुय्यँुवरीत फाटकक फाटसँ एक बेर फेर हुलकी मारलक। बरामदाक आराम कुरसीसँ ओ कर्कश आवाज एक बेर फेर गूँजि उठलः कुय्याँ, देखही तँ रौ! फाटकपर के ठाढ अछि? जाए ने होइ छै ओने। सारा फेर हिम्मति देलकै।
ओहिना ओने चलि जेबै त । कुय्यँुवरीत डाँट फटकारक सम्भावनासँ चेतौलक।

उपर्युक्त अनूदित गद्यांश देखि लगैछ जे ई यथार्थतः कोनो मौलिक मैथिली उपन्यासक अंश होअए। निष्कर्षतः “पडोसिआ” उपन्यासक अनुवादक डा. विजयेन्द्र झा अनुवाद कलामे सेहो दक्ष छथि, पूर्णतः सफल भेल छथि।

VII. सम्पादित रचना

विद्यापतिकृत कीर्तिगाथा (2025)

विद्यापतिकृत कीर्तिगाथा (1402 05) ग्रन्थक पहिल बेर स्वतंत्र रूपेँ सम्पादन आ प्रकाशन डा. विजयेन्द्र झा द्वारा 2025 ई. मे कएल गेल। मात्र 72 पृष्ठक लघुकाय एहि पोथीकेँ सम्पादक दूइ खण्डमे बँटने छथि। दू विलास (अध्याय) क पहिल खण्डमे संस्कृत, मैथिली आ अवहट्ठमे कुल 42 गोट पद अछि। प्रत्येक पदक प्रारंभमे छन्दक नाम देल गेल अछि तथा मूल पदक शब्दार्थ एवं मैथिली व्याख्या सेहो देल गेल अछि। पहिल विलासमे कथानायक अर्जुन राएक यश कीर्ति पराक्रम शौर्य आदिक विवरण विस्तारसँ प्रस्तुत अछि। दोसर विलास घोर श्रृंगारिक अछि जाहिमे राधा कृष्णकेँ प्रतीक मानि हुनक केलि क्रीडाक चित्रण अछि। तेँ एहि पोथीक नाम हरिकेलि कहब सेहो उचित होएत। श्रृंगारिक वर्णनक क्रममे नायक (कृष्ण) आ नायिक (राधा) क संग अनेक

सखी सबहिक नख शिख वर्णन कएल गेल अछि। श्रृंगार प्रधान कीर्तिगाथामे नायक नायिकाक उद्दाम प्रेम चित्रित अछि, जाहिमे युवावस्थासँ उन्मत्त नायक छथि कृष्ण आ यौवन मदिरासँ मातलि नायिका छथि राधा।

कीर्तिगाथाक दोसर खण्डमे विद्यापतिक परिचय, हुनक तीनू अवहट्ठ पोथी कीर्तिगाथा, कीर्तिपताका तथा कीर्तिलताक विश्लेषण संम्पादक कएने छथि; संगहि भीषमकविकृत प्रबंधकाव्यक संक्षिप्त विवरण तथा पोथीक अन्तमे विद्यापति आ संम्पादक अपन वंशावलीक उल्लेख सेहो कएने छथि। कीर्तिगाथा तात्कालीन मिथिलाक ऐतिहासिक,सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृति, धार्मिक आ राजनीतिक परिस्थितिक एकटा दस्तावेज थिक जकरा डा. झा अत्यन्त सरल आ सहज आ रोचक भाषामे व्याख्यायित कएलनि अछि।

कोसा (2020 2026)

डा. विजयेन्द्र झा "कोसा" विद्वत् समीक्षित मैथिली शोध पत्रिकक सम्पादन 2020सँ ल अद्यावधि लगातार करैत आबि रहल छथि। कोसाक समस्त अंक एकैसम शताब्दीक मैथिली साहित्यक विभिन्न विधा आधारित अछि जे अद्यावधि कथा, कविता, आलोचना आ उपन्यासपर प्रकाशित भ चुकल अछि। एकर 2026 म अंक "व्यक्तित्व आ कृतित्व" सान्दर्भिक प्रकाशनाधीन अछि जाहिमे वर्तमान शताब्दीक एक सएसँ बेसी साहित्यकारक "कृतित्व आ व्यक्तित्व"क समावेश कएल गेल अछि। कोसा पत्रिकाक स्तरीयता एहन विशिष्ट अछि जे एकरा बिहारक समस्त परम्परागत विश्वविद्यालयममे, स्नातकक पाठ्यक्रममे, सेहो सामिल कएल गेल अछि।

VIII. शोधालेख

डा विजयेन्द्र झाक करीब एक सए शोधालेख विभिन्न राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय, यूजीसी केयर्ड आ विद्वत् समीक्षित जर्नल, पुस्तक, अभिनन्दन ग्रन्थादिमे प्रकाशित छनि, जकर विवरण देब सेहो एतए अपेक्षित अछि

(1) मैथिली ओ गणितमे तात्त्विक संबंन्ध, 2017; घर बाहर; चेतना समिति, विद्यापति भवन, विद्यापति मार्ग, पटना; (2) मिथिलामे पंजी व्यवस्था आ ओकर प्रासंगिकता 2017; श्री मिथिला; R. No. WBMAI/2002/10825; मिथिला चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज, कोलकाता; (3) पुष्करकाण्डक स्रोत एवं विशेषता 2017; महाकवि लालदास: समय ओ रचना; चेतना समिति (प्रकाशन संख्या 81); विद्यापति भवन, विद्यापति मार्ग, पटना; (4) कीर्तनिया नाटक, 2018; अक्षर गाथा; ISBN:978 93 82013 41 9; नवारम्भ, पटना; (5) आधुनिक मैथिली कविताक भविष्य. 2018; मैथिली; ISSN:2229 5291 MAITHILI; मैथिली साहित्य परिषद्, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, नरगौना पैलेस, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा; (6) उचाटमे चित्रित सामाजिक संवेदना, 2018; कोसा; ISBN:978 81 9340000 7 4; प्रतिभा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर; (7) मैथिली लोकसाहित्य एवं संस्कृति 2019; अमृताक्षर (विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, शोध पत्रिका); मैथिली विकास कोष, पटना विश्वविद्यालय, पटना; (8) एकैसम शताब्दीक मैथिली कथा, 2020; कोसा (शोध पत्रिका); ISSN:ID AR 26310; मैथिली विभाग, ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय (बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय), मुजफ्फरपुर; (9) शिकाइत

नहि, आत्ममंथन,2020**; घर बाहर (पाठकीय); चेतना समिति, विद्यापति भवन, विद्यापति मार्ग, पटना**;(10) **एकैसम शताब्दीक मैथिली कविता, 2021; कोसा (शोध पत्रिका);** ISSN: ID AR 26310**; विश्वविद्यालय मैथिली विभाग आ मैथिली विभाग, ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय (बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय), मुजफ्फरपुर;** (11) **पयस्विनी**, 2021; **साहित्यरथी;** ISBN:978 93 84394 39 4; **साहित्यिकी, सरिसब पाही, मधुबनी (बिहार);** (12) **एकैसम सदीः मैथीली आलोचना,** 2022 23; **कोसा (शोध पत्रिका);** ISSN: ID AR 31209; **विश्वविद्यालय मैथिली विभाग आ मैथिली विभाग, ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय (बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय), मुजफ्फरपुर;** (13) **शांति सुमनः मैथिली साहित्यमे अवदान,** 2024; **लहक (साहित्य की वैचारिक पत्रिका, अंक** 39); ISSN:2348 2672; Saudhatri Prakashan, B 3, Bandipur Road, Mistry Para, Bansdroni, P. S. Regent Park, Kolkata 700070

(14) **दूब धानः उषाकिरण खान,** 2024 25**; संगत (कथांक); ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय (बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय), मुजफ्फरपुर;** (15) **एकैसम शताब्दीक मैथिली उपन्यास,** 2024**; कोसा (शोध पत्रिका);** ISSN: ID AR 31209**; ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय आ विश्वविद्यालय, मैथिली विभाग (बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय) मुजफ्फरपुर**;(16) FOLK SONGS OF MITHILA, 2018; Pataliputra Journal of Indology; ISSN: 2320 351 ×; Journal No. 41629 in UGC Approved Journal List; Pataliputra Centre for Indological Research (PCIR), Patna;(17) **मैथिलीक विशेषण शब्द व्युत्पत्ति,** 2022**;** Indian Research Bulletin; ISSN:2348 1315(New Delhi); (18) **मिथिलाक धार्मिक जीवन.** 2023**;** International Journal of Research and Studies; ISSN:2395 6984(New Delhi); (19) MAITHILI: NURSERY RHYMES, RIDDLES, APHORISMS & PROVERBS. IJCRT 293414, Sept. 2025, ISSN :2320 2882, Volume: 13, Issue 9, Page No. b539 b543. (20) THE FOLK SONGS OF MITHILA: A CRITICAL ANALYSIS

IJCRT 294097, Sept. 2025, (International Journal of Creative Research Thoughts) ISSN : 2320 2882, Volume:13, Issue 9, Page No.e216 e223; (21) DEVELOPMENT OF MAITHILI NOVEL: PRE MODERN ERA, Shodh Drishti, ISSN:096ors6650, Vol. 16, No. 9.1, September, 2025, (22) **मैथिली भाषा साहित्य :एक विश्लेषण (हिन्दी),** Anukriti**,** ISSN**:** 2250 1193, vol. 15, No 7, July 2025, (23) BALLADS AND TALES IN MAITHILI LITERATURE, IJCRT 294345, Sept. 2025, (International Journal of Creative Research Thoughts, ISSN :2320 2882, Volume:13, Issue 9, Page No. f652 f658, (24) **मैथिली भाषाक उद्‌भव ओ विकासः एक विश्लेषण** IJMT International Journal of Multidisciplinary Trends, ISSN: 2709 9369,Print ISSN: 2709 9350, Vol. 7, Issue 9, Published: 2025, page 121 129; (25) A CRITICAL ANALYSIS OF MAITHILI SHORT STORIES : TWENTY FIRST CENTURY,

IJCRT 294551, October,2025, (International Journal of Creative Research Thoughts, ISSN: 2320 2882, Volume:13, Issue 10, Page No a305 a312, (26) CUSTOMS AND BELIEFS OF MITHILA, IJCR (Interdisciplinary Journal of Contemporary Research) ISSN:2393:8358, Vol. 12, No. 7.1, July 2025. Page 145 150; (27) **मिथिलाक पंजी प्रथाः प्रासंगिकता आ मूल्यांकन,** TIJER 159938**,** INTERNATIONAL JOURNAL ISSN:2349 9249,PAGE a285 a291; (28) **कृष्णजन्मक रचयिता मनबोधः एक नब दृष्टिकोण,** IJIRT155668 (International Journal of Innovative Research in Technology) ISSN:2349 6002, Volume 12, Issue 5, 14 October, 2025, Page no. 2292 2299; (29) **मैथिली शब्दः एक विवेचन,** IJIRT 186015, (International Journal of Innovative Research in Technology) ISSN: 2349 6002, volume 12,. Issue 5, 28 October 2025; (30) VIDYAPATI AND HIS KIRTIGATHA: A CRITICAL ANALYSIS, TIJER 160076

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL ISSN:2349 9249, Volume 12, Issue 10, October 2025, PAGE a714 a720; (31) **ब्रजबुलि साहित्य : एक आलोचनात्मक विश्लेषण** IJEDR 302243, INTERNATIONAL JOURNAL OF ENGINEERING DEVELOPMENT AND RESEARCH ISSN:2321 9939, Vol.13, Issue 4, page no.253 264, October 2025, (32) सिद्धसाहित्य : एक विश्लेषण TUCON Vol. ×Lvi, Issue 2, June 2025, ISSN:2348 1315, UGCSLNo.: 64684 TOUCAN, Research and Development(Incorporated under the Companies Act, 2013 (28 of 2013), Ministry of Corporate Affairs, Gov. of India, (ISO 9001:2025 Certified), (33) A CRITICAL ANALYSIS OF MAITHILI POETRY: TWENTY FIRST CENTURY, IJEDR 302533,INTERNATIONAL JOURNAL OF ENGINEERING DEVELOPMENT AND RESEARCH ISSN:2321 9939, Vol.13, Issue 4, page no.669 676, 18 November 2025, (34) ANTIQUITY AND DEVELOPMENT OF MAITHILI LANGUAGE AND LITERATURE : AN ANALYSIS, IJRDET 1125_165, International Journal of Recent Development in Engineering and Technology, ISSN : 2347 6435, Volume 14, Issue 11, 30 November, 2025, page381 387 (35) USHA KIRAN KHAN S MAMOIR SHORT STORY DOOB DHAN: AN EVOLUATION

IJEDR 302872, International Journal of Engineering Development and Research ISSN:2321 9939, Volume 13, Issue 4, December 25, Page No.276 282; (36) **मैथिली व्याकरणिक मीमांसा: एक विश्लेषण** IJEDR 303018, INTERNATIONAL JOURNAL OF ENGINEERING DEVELOPMENT AND RESEARCH ISSN:2321 9939, Vol. 13, Issue 4, page no 850 857, December 2025; (37) **ध्वनि विज्ञानक उपादेयता आ ध्वनिक स्रोत एवं विकास: एक विश्लेषण** IJIRT 188931, IJIRT (International Journal of Innovative Research in Technology) ISSN: 2349 6002, volume12, Issue 7, 16 December, 2025; (38) A CRITICAL ANALYSIS OF MAITHILY NOVEL: TWENTY FIRST CENTURY, IJIRT 189645International Journal of Innovative Research in Technology), ISSN:2349 6002, vol. 12, Issue 7, December 2025, Page no. 7008 7019; (39) **शैलीविज्ञान आ शिशु बोलीक विकास : एक विवेचन**, IJIRT 189261 (International Journal of Innovative Research in Technology), ISSN: 2349 6002, volume12, Issue 7, 22 December, 2025, page 5260 5266; (40) **प्राच्य मिथिलाक गीत संगीत आ ज्ञान विज्ञानक परम्परा**, IJIRT 190414 (International Journal of Innovative Research in Technology), ISSN: 2349 6002 volume12, Issue 8, January, 2026, page 4312 431; (41) **पारो क समाधान तकैत नवतुरिया**,IJIRT 190515 (International Journal of Innovative Research in Technology), ISSN: 2349 6002, January, 2025, page 3837 3841; (42) **तिरहुता लिपि आ ओकर वैशिष्ट्य: एक विश्लेषण**

IJCRT 299768 January,2025, IJCRT (International Journal of Creative Research Thoughts, ISSN l: 2320 2882, Volume:14, Issue 1, Page No a84 a91; (43) **कीर्तिगाथा क ऐतिहासिक आ भाषाशास्त्रीय मूल्यांकन** IJIRT 191331 (International Journal of Innovative Research in Technology), ISSN: 2349 6002, Volume 12, Issue 8, 12 January, 2026, page 6555 6567; (44) **मैथिली साहित्यक ऐतिहासिक काव्य: कीर्तिलता**, TIJER 160874, INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL, ISSN:2349 9249. Vol.13, Issue 1, 13 January, 2026, PAGE a155 a163; (45) **समकालीन मैथिली कवितामे काव्यांदोलन**, IJEDR 303826, INTERNATIONAL JOURNAL OF ENGINEERING DEVELOPMENT AND RESEARCH ISSN:2321 9939, Vol 14, Issue 1. page no 309 318, 23 January 2026; (46) **ज्योतिरीश्वरकृत मैथिली धूर्तसमागम : एक विश्लेषण**, IJEDR 303891, INTERNATIONAL JOURNAL OF ENGINEERING DEVELOPMENT AND RESEARCH ISSN:2321 9939, Vol 14, Issue 1, Page no 679 688, January 2026; (47) **मैथिली लोकगीत स्वरूप आ वैशिष्ट्य**, IJEDR 304052 INTERNATIONAL JOURNAL OF ENGINEERING DEVELOPMENT AND RESEARCH, ISSN:2321 9939, Vol. 14, Issue 2, Page no 663 562, 7 January 2026; (48) **आचार्य सुमनी आ उगनाक दआदवाद मे चित्रित दलित चेतना जागरण**, IJEDR303994,

INTERNATIONAL JOURNAL OF ENGINEERING DEVELOPMENT AND RESEARCH ISSN:2321 9939, Vol 14, Issue 1, Page no 332 338, January 2026; (49) **सर्वहाराक चेता यात्री ओ हुनक काव्य वैशिष्ट्य,** IJCRT 301103, 4 February,2025, (International Journal of Creative Research Thoughts, ISSN : 2320 2882, Volume:14, Issue 2, Page No a453 a460; (50) **मैथिली भाषा साहित्यक रूपरेखा**

IJIRT 192310 (International Journal of Innovative Research in Technology) ISSN: 2349 6002, volume12, Issue 9 4 February 2026, page 873 883; (51) **विद्यापति आ हुनक श्रृंगारिक पद** IJEDR 304114 INTERNATIONAL JOURNAL OF ENGINEERING DEVELOPMENT AND RESEARCH, ISSN:2321 9939, Vol. 14, Issue 1, Page no 976 990, 11 February, 2026; (52) **मैथिली भाषाविज्ञानी आ हुनक अवदान** IJEDR 304193 INTERNATIONAL JOURNAL OF ENGINEERING DEVELOPMENT AND RESEARCH, ISSN:2321 9939, Vol. 14, Issue 1, 11 February, 2026; (53) **मैथिली भाषाः अभिलक्षण, प्रकृति आ सोपान,** IJEDR 304289 INTERNATIONAL JOURNAL OF ENGINEERING DEVELOPMENT AND RESEARCH, ISSN:2321 9939, Vol. 14, Issue 1, Page no 1 12, 21 February, 2026; (54) **भाषाक विविध स्वरूप विश्लेषण,** JOURNAL OF ADVANCE AND FUTURE RESEARCH. (ISSN: 2984 889X). Volume 4 | Issue 3 | March 2026, Page No: 118 136; (55) **प्रबोध नारायण सिंहः भाषाविज्ञानी,** JAAFR / Vol 4 / Issue 3 / 461, JOURNAL OF ADVANCE AND FUTURE RESEARCH (ISSN: 2984 889X). March 2026 Page No: 972 985 **आदि करीब एक सए शोधालेख डा. झाक प्रकाशित छनि, मुदा एहि आलेखक कायाकेँ देखैत शेष शोधालेखक उल्लेख करब एतए संभव नहि।**

IX. शोध निर्देशन

डा. विजयेन्द्र झाक कुशल निर्देशनमे एखन धरि मात्र तीन गोट शोधप्रज्ञ पंजीकृत भेल छथि, जाहिमे डा. अंजली कुमारी 2023 **ई. मे, पीएच. डी. (विद्यावारिधि) क उपाधि प्राप्त क चुकल छथि आ शेष गीता कुमारी (यूजीसी जे.आर.एफ.) तथा संगीता कुमारी शोधरत छथि।**

X. निष्कर्ष

डा. विजयेन्द्र झा मैथिली साहित्यक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् छथि। आर्थिक विपन्नताक कारणेँ हिनक जीवन अत्यन्त संघर्षशील रहल। मैट्रिक पास कएलाक पश्चात् आगाँक एम. ए. धरिक पढाइ लेल झंझारपुर, दरभंगा आ पटनामे रहबाक लेल, अपन उदर पोषणसँ ल डेरा भाडा, किताब काँपी सभ खर्च स्वयं ई ट्यूशन क पूर्ति करैत छलाह। एहना स्थितिमे अनुमान लगाओल जा सकैछ जे जीवनमे हिनका कोन प्रकारक संघर्षक सामना करए पडल हेतनि। डा. झा 2020 **मे विद्या वारिधिक (पीएच. डी) क उपाधि बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालयसँ तखन प्राप्त कएलनि, जखन ओ बिहार लोक सेवा आयोगसँ** 2016 **मे चयनित भ बिहार विश्वविद्यालयक ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालयमे सहायक प्राचार्यक रूपमे योगदान देलनि। अल्पावधिमे डा. झा मैथिली भाषा साहित्यक लेल अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थक रचना कएलनि,जाहिमे मैथिली व्याकरण ओ रचना, मैथिली भाषाविज्ञान, मैथिली साहित्यक इतिहास (आदिकाल आ मध्यकाल), विद्यापतिकृत कीर्तिगाथाक सम्पादन, मैथिली निबन्ध वाटिका तथा अंग्रेजी भाषामे एक मात्र आलोचनात्मक पोथी** A Critical Analysis of Maithili Literary Essays **क रचना कएलनि। एकर अतिरिक्त कोसाक सम्पादन** 2020 **सँ करैत आबि रहल छथि, जे क्रमशः कथा, कविता, आलोचना आ उपन्यासक रूपमे प्रकाशित भ चुकल अछि। कोसाक** 2026 **क अंक एकैसम सदीमे स्थापित**

करीब सएसँ बेसी साहित्यकारक कृतित्व आ व्यक्तित्व परक शोधालेख प्रकाशनाधीन अछि। संगहि डा. झाक करीब एक सए शोधपरक आलेख विभिन्न राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय जर्नलमे सेहो प्रकाशित छनि। समग्र रूपेँ डा. विजयेन्द्र झाक स्वाल्प समयमे कएल गेल मैथिलीक सेवा स्तुत्य अछि जाहि लेल समस्त मैथिली जगत् सदैव हिनक ऋणी रहत।

संदर्भ ग्रन्थसूची

[1] **डा. विजयेन्द्र झा, मैथिली व्याकरण ओ रचना. मुजफ्फरपुर, भारतः प्रतिभा प्रकाशन,** 2021.

[2] **डा. विजयेन्द्र झा, मैथिली भाषाविज्ञान. मुजफ्फरपुर, भारतः प्रतिभा प्रकाशन,** 2022.

[3] **डा. विजयेन्द्र झा, मैथिली साहित्यक इतिहास. मुजफ्फरपुर, भारतः प्रतिभा प्रकाशन,** 2023.

[4] **डा. विजयेन्द्र झा, पडोसिआ (अनूदित). नई दिल्ली, भारतः साहित्य अकादेमी,** 2023.

[5] **डा. विजयेन्द्र झा, विद्यापतिकृत कीर्तिगाथा. नई दिल्ली, भारतः माण्डा पब्लिशर्स,** 2025.

[6] Dr. B. Jha, A Critical Analysis of Maithili Literary Essays. Ghaziabad, U.P., India: Jijyasa Prakashan, 2026.

[7] **डा. विजयेन्द्र झा, मैथिली निबन्ध वाटिका. गाजियाबाद, यू.पी., भारतः जिज्ञासा प्रकाशन,** 2026.

[8] **डा. विजयेन्द्र झा,** Ed., **कोसा (विद्वत् समीक्षित मैथिली शोध पत्रिका). मुजफ्फरपुर, भारतः विश्वविद्यालय एवं ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय, मैथिली विभाग,** 2020–present.